नए माध्यमों में समाचार : उपयोग एवं प्रभाव का अध्ययन

(रायपुर संभाग के संदर्भ में)

कुशाभाउ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के अन्तर्गत जनसंचार विषय में पी-एच.डी. उपाधि के पंजीयन हेतु

शोध की रूपरेखा

2012

शोध निर्देशक

(डॉ. नरेन्द्र त्रिपाठी)

असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,

इलेक्ट्रानिक मीडिया विभाग,

कुशाभाउ ठाकरे पत्रकारिता एवं

जनसंचार विश्वविद्यालय

शोधकर्ता

राकेश कुमार पाण्डेय

शोध केंद्र एवं स्थान - जनसंचार विभाग

कुशाभाउ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय

काठाडीह , रायपुर (छत्तीसगढ़)

1. शोध का शीर्षक - नए माध्यमों में समाचार : उपयोग एवं प्रभाव का अध्ययन

(रायपुर संभाग के संदर्भ में)

2. परिचय

वैज्ञानिक प्रगति का प्रभाव संचार के साधनों पर हमेशा रहा है। रेडियो के आविष्कार ने समाचार संप्रेषणीयता की गति को बढ़ा दिया। कुछ ही दिनों में इसने लोगों में अपना अभूतपूर्व स्थान बना लिया। सरकार ने सूचना, शिक्षा एवं मनोरंजन सभी के लिए इसका समान रूप से उपयोग किया। परन्तु हर माध्यम की अपनी एक सीमा होती है। रेडियो में भी केवल सुनने की सुविधा थी। इस प्रकार यह अपने आप में पूर्ण होकर भी अपूर्णथा। टेलीविजन के आविष्कार से पत्रकारिता जगत को एक नया आयाम मिला। चूंकि यह दृश्य-श्रव्य माध्यम था। अत: मीलों दूर बैठे ही किसी घटना का हूबहू दर्शन दूरदर्शन के माध्यम से संभव हो सका। टीवी चैनल्स ने पत्रकारिता की विधा में आमूल-चूल परिवर्तन कर दिया है। इसने मीडिया को पहले से ज्यादा शक्तिशाली एवं प्रभावकारी बना दिया है। लाइव-शो, टॉक-शो, लाइव-रिपोर्टिंग आदि ने पत्रकारिता को नई उंचाइयां प्रदान की है। तकनीक के विकास का अपना प्रभाव होता है। मीडिया/पत्रकारिता भी इससे अछूता नहीं है। तकनीकि क्रांति ने पत्रकारिता पर भी अपना व्यापक प्रभाव डाला है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र, मुगलकाल के वाक्यानवीस तथा प्रथम स्वातंत्र्य समर (1857) काल में रोटी व कमल प्रतीक के बाद राजकीय मुनि और सुदूर देहाती क्षेत्रों में ठेठ हरकारों या संवादियों से गुजरते हुए पत्रकारिता अपने वर्तमान अत्याधुनिक वक्रांतिकारी स्वरूप 'ई जर्नलिज्म' तक आ पहुंची है।

" बदलाव अपरिहार्य है, प्रगति वैकल्पिक है, भविष्य अब है... "

- मार्क ब्रिग्स

1980 में अमेरिका के न्यूयार्क टाइम्स, वॉल स्ट्रीट जनरल, डाव जोन्स ने अपने-अपने प्रिंट संस्करणों के साथ-साथ समाचारों का ऑनलाइन डेटाबेस रखना भी प्रारंभ किया। ऑनलाइन पत्रकारिता को तब और गति मिली जब 1981 में टैंडी द्वारा लैपटॉप कंप्यूटर का विकास हुआ। इससे किसी एक जगह से ही समाचार संपादन, प्रेषण करने की समस्या जाती रही। 1983 में ऑनलाइन समाचार पत्रों के प्रचलन में उस समय क्रांतिकारी परिवर्तन आया, जब अमेरिका के Knight-Ridder newspaper group ने AT&T के साथ मिलकर लोगों की माँग पर प्रायोगिक तौर पर उनके कंप्यूटर और टेलिविजन पर

समाचार उपलब्ध कराने लगे। 90 के दशक आते-आते संवाददाता कंप्यूटर, मोडेम, इंटरनेट या सैटेलाइट का प्रयोग कर विश्व से कहीं भी तत्क्षण समाचार भेजने और प्रकाशित करने में सक्षम हो गये। 1998 में विश्व के लगभग 50 मिलियन लोग 40,000 नेटवर्क के माध्यम से प्रतिदिन इंटरनेट का उपयोग किया करते थे, उनमें एक बड़ी संख्या ऐसे लोगों की होती थी जो विश्व भर के समाचार के लिए समाचार पत्र, समाचार एजेंसी और पत्रिकाओं को तलाशने के लिए इंटरनेट का उपयोग करते थे। 1994 में एकमात्र अमेरिका की टाइम मैग्जीन ने ही इंटरनेट पर अपना संस्करण लांच किया था। इसके बाद 450 पत्रिकाओं और समाचार पत्र प्रकाशनों ने इंटरनेट में स्वयं को प्रतिष्ठित किया। तब भी इंटरनेट पर कोई समाचार एंजेसी कार्यरत नहीं थी किन्तु एक अनुमान के अनुसार दिसम्बर 1998 के अंत तक 4700 मुद्रित समाचार पत्र इंटरनेट पर थे।
2001 में भारत की साक्षरता 65.38 प्रतिशत थी और इंटरनेट उपयोग करने वालों की संख्या 2.85 करोड़ था। 2004-05 में यह संख्या बढ़कर 3.85 करोड़ हो गया। केवल चार सालों में इंटरनेट उपयोग करने वालों की संख्या में 54 प्रतिशत की वृद्धि हुई। सितंबर 2008 में इंटरनेट उपभोक्ताओं की संख्या 4 करोड़ 53 लाख हो गई। भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं में से 57 प्रतिशत की उम्र 18 से 35 वर्ष के बीच है। आज का युवा टेक्नो फ्रेंडली है। उसके लिए तकनीक एक सहयोगी की भूमिका अदा कर रहा है। जिन समाचारों के लिए आज भी बड़ी आबादी समाचार-पत्र, पत्रिकाओं का सहारा लेती है। उन्हीं समाचारों के लिए युवा इंटरनेट का सहारा लेते हैं। इसकी सबसे बड़ी वजह है इसका प्रिंट की तरह समाचारों की पठनीयता एवं टीवी की तरह शीघ्रता से समाचार प्राप्त होना। संचार के विभिन्न आयाम समय के साथ बदलते रहे हैं और इनमें पर्याप्त शोध और अनुसंधान हुए हैं। न्यू मीडिया के बढ़ते उपयोग से आशान्वित मीडिया विशेषज्ञों ने न सिर्फ इसे भविष्य की पत्रकारिता की संज्ञा दी है, बल्कि उनका मानना है कि यह समाचार पत्रों को प्रतिस्थापित करने की क्षमता रखता है।

" वेब के छोटे बड़े हजारों मीडिया साइट्स पर वेब पत्रकारिता का उद्भव पहले से ही हो चुका है..." (जॉन बत्तेल्ले)

" मै आश्वस्त हूँ कि सभी समाचार पत्र प्रतिष्ठानों के बंद होने के बावजूद पत्रकारिता नहीं मरेगी..." (मार्क ब्रिग्स)

वेब मीडिया का आशय

21वीं शताब्दी सूचना-प्रौद्योगिकी का युग है। कलम विहीन पत्रकारिता के इस युग में इंटरनेट पत्रकारिता ने एक युग का सूत्रपात किया है। वेब पत्रकारिता को हम इंटरनेट पत्रकारिता, ऑनलाइन पत्रकारिता, सायबर पत्रकारिता आदि नाम से जानते हैं। यह कंप्यूटर और इंटरनेट के सहारे संचालित ऐसी पत्रकारिता है जिसकी पहुँच किसी एक पाठक, एक गाँव, एक प्रखंड, एक प्रदेश, एक देश तक नहीं बल्कि समूचा विश्व है और जो डिजिटल तंरगों के माध्यम से प्रदर्शित होती है। प्रिंट मीडिया से यह इस रूप में भी भिन्न है क्योंकि इसके पाठकों की संख्या को परिसीमित नहीं किया जा सकता है। इसकी उपलब्धता भी सार्वत्रिक है। इसके लिए मात्र इंटरनेट और कंप्यूटर, लैपटॉप, पॉमटॉप या मोबाईल की जरूरत होती है। इंटरनेट, वेब-मीडिया की सर्वव्यापकता को भी चरितार्थ करती है, जिसमें ख़बरें दिन के चौबीसों घंटे और हफ़्ते के सातों दिन उपलब्ध रहती हैं। वेब पत्रकारिता की सबसे खासियत है उसका वेब यानी तंरगों पर घर होना. अर्थात् इसमें उपलब्ध किसी दैनिक, साप्ताहिक, मासिक पत्र-पत्रिका को सुरक्षित रखने के लिए किसी आलमीरा या लाइब्रेरी की जरूरत नहीं होती। समाचार पत्रों और टेलिविज़न की तुलना में इंटरनेट पत्रकारिता की उम्र बहुत कम है लेकिन उसका विस्तार तेज़ी से हुआ है। ऑनलाइन पत्रकारिता में मल्टीमीडिया का प्रयोग होता है जिसमें टेक्स्ट, ग्राफिक्स, ध्वनि, संगीत, गतिमान वीडियो, थ्री-डी एनीमेशन, रेडियो ब्रोडकास्टिंग, टीवी टेलीकास्टिंग प्रमुख है। इसके साथ ही इसमें सभी माध्यमों के मुकाबले पाठकीय प्रतिक्रिया भी तेजी से मिलती है। वेब मीडिया में प्रस्तुतिकरण और प्रतिक्रियात्मक गतिविधि एवं सब कुछ ऑनलाइन (At a time) होता है। परंपरागत प्रिंट मीडिया एट ए टाइम संपूर्ण संदर्भ पाठकों को उपलब्ध नहीं करा सकता किन्तु ऑनलाइन पत्रकारिता में वह भी संभव है – मात्र एक हाइपरलिंक के द्वारा।

भारत में वेब मीडिया पर समाचार

भारत में इंटरनेट की सुविधा 1990 के मध्य में मिलने लगी। इस विधा में कुछ समय पहले तक अंग्रेजी का एकाधिकार था, लेकिन पिछले पांच वर्षों में हिन्दी ने भी अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज की है। इंदौर से प्रकाशित समाचार पत्र 'नई-दुनिया' ने हिंदी का पहला वेब पोर्टल 'वेब-दुनिया' के नाम से शुरू किया। अब तो लगभग सभी प्रमुख समाचार पत्रों का इंटरनेट संस्करण उपलब्ध है। भारत में चेन्नई का 'द हिन्दू' पहला

भारतीय अख़बार है, जिसका इंटरनेट संस्करण 1995 में शुरू हुआ। इसके तीन साल के भीतर अर्थात् 1998 तक लगभग 48 समाचार पत्र ऑनलाइन हो चुके थे। ये समाचार पत्र केवल अंगरेज़ी में नहीं अपितु अन्य भारतीय भाषा जैसे हिंदी, मराठी, मलयालम, तमिल, गुजराती भाषा में थे। इस अनुक्रम में ब्लिट्ज़, इंडिया टूडे, आउटलुक और द वीक भी इंटरनेट पर ऑनलाइन हो चुकी थीं। ऑनलाइन भारतीय समाचार पत्रों और पत्रिकाओं की पाठकीयता भारत से कहीं अधिक अमेरिका सहित अन्य देशों में है जहाँ भारतीय मूल के प्रवासी लोग रहते हैं या अस्थायी तौर पर रोजगार में संलग्न हैं। एक शोध के अनुसार (किरण ठाकुर, पुणे विश्वविद्यालय के रिसर्च पेपर 'भारत में इंटरनेट पत्रकारिता' के अनुसार) दिसम्बर 1997 तक कुल पंजीकृत 4719 समाचार पत्रों के 1 प्रतिशत से कम ऑनलाइन भी हो चुके थे। आकाशवाणी ने 2 मई 1996 को ऑनलाइन सूचना सेवा का अपना प्रायोगिक संस्करण को इंटरनेट पर उतारा था। 2006 के अंत तक देश के लगभग सभी प्रतिष्ठित समाचार पत्रों एवं टेलीविजन चैनलों के पास अपना इंटरनेट संस्करण भी है, जिसके माध्यम से वे पाठकों को ऑनलाइन समाचार उपलब्ध करा रहे हैं। मौजूदा समय में 14 ई-जीन, 85 न्यूज पेपर, 73 ऑनलाइन न्यूज, 92 पत्रिकाएं, 9 जनरल, 10 टीवी न्यूज एवं 8 न्यूज एजेंसी इंटरनेट पर सक्रिय हैं।

3. पूर्व में किए गए शोध कार्य का विवरण

कोई भी नया शोधकार्य एक ऐसे भवन की तरह होता है जो पूर्व में किए हुए शोधकार्य की नींव पर निर्मित किया जाता है। जिस प्रकार भवन की मजबूती में नींव की महत्वपूर्ण भूमिका होती है ठीक उसी प्रकार नए शोध रूपी भवन निर्माण कार्य में, पूर्व में किए गए शोधकार्य एवं उपलब्ध साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। **मेरिल ब्राउन (2005)** ने दर्शकों से एकत्र डाटा का विश्लेषण करते हुए आन लाइन मीडिया की प्रगति को समाचार पत्रों के लिए खतरे का सूचक बताया। 18-34 साल के युवाओं पर किए एक अध्ययन के अनुसार इंटरनेट पोर्टल्स (याहू, गूगल और एमएसएन आदि) का युवा अपने मनोनुकूल समाचार के लिए ज्यादा उपयोग कर रहे हैं। 44 प्रतिशत युवाओं का मानना है कि वे दिन में कम से कम एक बार पोर्टल का उपयोग समाचार के लिए जरूर करते हैं जबकि 19 प्रतिशत ने समाचार के लिए समाचार पत्र को प्राथमिकता देने की बात कही। (कार्नेगी कारपोरेशन के लिए किए गए शोध से उद्धृत)। अतएव इस नए शोधकार्य में जिन उपलब्ध साहित्यों का अध्ययन किया जाना है, उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

1- मीडिया विमर्श (जून-अगस्त 2007) के इस अंक में वेब पत्रकारिता से जुड़े लोगों एवं बुद्धिजीवियों के लेख प्रकाशित हो चुके हैं। इन लेखों में ज्यादातर लेखकों ने वेब मीडिया के भविष्य को उज्जवल बताया है। साथ ही इस क्षेत्र के समक्ष आ रही व्यावहारिक चुनौतियों का भी जिक्र किया है।

2- मीडिया मीमांसा (अप्रैल-जून 2008) के अंक में उमेश चतुर्वेदी ने वेब मीडिया को अन्य मीडिया का सहभागी बताया है। जयदीप कार्णिक ने अपने लेख में सह अस्तित्व की बात कही है। परंतु बीबीसी की वेब संपादक सलमा जैदी का कहना है कि नया मीडिया चुनौती दे भी रहा है और झेल भी रहा है।

3- प्रभासाक्षी.कॉम के निदेशक बालेन्दु दधीचि ने इस क्षेत्र में संभावनाओं और चुनौतियों पर अपने लेख के माध्यम से प्रभाव डाला है। उनके अनुसार आने वाले समय में वेब मीडिया और लोकप्रिय माध्यम के रूप में उभरेगा।

4. प्रस्तावित विषय पर शोध कार्य के उद्देश्य

इस शोध कार्य का मुख्य उद्देश्यहै -

1. अध्ययन में सहभागी उत्तरदाताओं की समाजार्थिक परिस्थिति का अध्ययन।
2. नए माध्यम में समाचार के प्रस्तुतिकरण का अध्ययन।
3. विविध प्रारूपों में समाचार के उपयोग का अध्ययन।
4. विविध प्रारूपों में संप्रेषित समाचारों के प्रभाव का अध्ययन।

5. परिकल्पना

शोध के विषय में मेरी परिकल्पना यह है कि -

1. समाचार के लिए नए माध्यम का उपयोग उच्च आय वर्ग तक सीमित है।
2. नए माध्यमों में समाचारों का प्रस्तुतिकरण आकर्षक तरीके से किया जा रहा है।
3. नए माध्यमों में समाचार के उपयोग के लिए कंप्यूटर का उपयोग सर्वाधिक हो रहा है।
4. विविध प्रारूपों में संप्रेषित समाचार युवाओं को ज्यादा आकर्षित कर रहे हैं।

इस शोध कार्य के माध्यम से उक्त परिकल्पना का परीक्षण किया जाएगा।

6. शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन "नए माध्यम में समाचार : उपयोग एवं प्रभाव का अध्ययन" छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर संभाग में संपादित होगा। अध्ययन में अपनायी जाने वाली शोध प्रविधि को **तीन खंडों** में वर्गीकृत किया गया है। **प्रथम खंड** में शोध अभिकल्प की जानकारी है। **द्वितीय खंड** में प्रक्षेत्र तकनीकी एवं अध्ययन में सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग का विवरण है। **तृतीय खंड** में चर एवं उनके मापन को स्पष्ट किया गया है।

खण्ड - 1 शोध अभिकल्प (Research Design)

शोध परिमिति का यह प्रथम खंड दो उपखंडों में वर्गीकृत है।

1- जिलों का चयन

2- उत्तरदाताओं का चयन

जिलों का चयन

जिलों का चयन इस आधार पर किया जाएगा कि वे पूरे राज्य के प्रतिनिधि गुणों को प्रदर्शित कर सके। अध्ययन को वैज्ञानिक बनाने एवं उसका सामान्यीकरण करने के लिए चयनित जिलों में से प्रत्येक से दो विकासखंडों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया जाएगा।

उत्तरदाताओं का चयन

चयनित विकास खंडों में से 15 उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यमूलक निदर्शन पद्धति की सहायता से किया जाएगा।

खण्ड - 2 शोध प्रक्षेत्र, तकनीकी एवं अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियां

शोध प्रविधि का यह द्‌वितीय खंड निम्न उपखंडों में वर्गीकृत होगा।

1 - नए माध्यमों में समाचार का प्रारूप

नए माध्यमों में समाचार का प्रारूप जानने के लिए कंप्यूटर, इंटरनेट, इंटरनेट टेलीविजन, डी.टी.एच., इंटरैक्टिव टेलीविजन, लैपटॉप, पॉम टाप, नोट पैड जैसे स्वरूपों को अध्ययन में शामिल किया जाएगा।

2 - अध्ययन के उपकरण

अध्ययन के विविध पहलुओं से संबंधित जानकारियों के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया जाएगा। विभिन्न माध्यमों में समाचारों के प्रस्तुतिकरण के अध्ययन के लिए अंर्तवस्तु विश्लेषण पद्धति का प्रयोग किया जाएगा।

3 - अध्ययन अवधि

प्रस्तुत अध्ययन 1 अक्टूबर 2012 से 30 सितम्बर 2013 तक संपन्न होगा।

4 - समंक संकलन की पद्धति

अध्ययन को गहन एवं वैज्ञानिक बनाने की दृष्टि से उद्देश्यों के अनुरूप पद्धति का प्रयोग किया जाएगा।

उद्देश्य क्रमांक 1- (अध्ययन में सहभागी उत्तरदाताओं की समाजार्थिक परिस्थिति का अध्ययन) के निदान के लिए अध्ययन में सहभागी उत्तरदाताओं की समाजार्थिक आर्थिक परिस्थिति का अध्ययन करने के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया जाएगा।

उद्देश्य क्रमांक 2- (नए माध्यम में समाचार के प्रस्तुतिकरण का अध्ययन) की पूर्ति के लिए मीडिया शोध की अन्तर्वस्तु विश्लेषण पद्धति का प्रयोग किया जाएगा।

उद्देश्य क्रमांक 3- (विविध प्रारूपों में समाचारों के उपयोग का अध्ययन) के लिए चयनित जिलों में दैव निदर्शन पद्धति की सहायता से 300 उत्तरदाताओं का चयन कर विभिन्न माध्यमों में समाचार के उपभोग का अध्ययन किया जाएगा।

उद्देश्य क्रमांक 4- (विविध प्रारूपों में संप्रेषित समाचारों के प्रभाव का अध्ययन) के लिए चयनित जिलों में से दैव निदर्शन पद्धति की सहायता से उत्तरदाताओं का चयन कर प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा।

5 - अध्ययन की सैद्धांतिक रूपरेखा

प्रस्तुत अध्ययन अन्तर्वस्तु विश्लेषण एवं प्रभाव का अध्ययन है।

6 - समंकों का विश्लेषण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में दो प्रकार से समंकों का संकलन किया जाएगा।

- प्राथमिक समंक
- द्वितीयक समंक

7- वर्गीकरण एवं सारणीयन

अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप समंकों का संकलन एवं वर्गीकरण कर सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग से प्राप्त तथ्यों का परीक्षण एवं विश्लेषण किया जाएगा।

8- सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग

प्रस्तुत अध्ययन को वैज्ञानिक एवं अध्ययन से प्राप्त तथ्यों के प्रमाणीकरण के लिए आवश्यकतानुसार सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया जाएगा।

खंड- 3 चर एवं उनका मापन

शोध प्रविधि का यह खंड निम्न उपखंडों में वर्गीकृत होगा।

उपखंड 1 - अध्ययन में सहभागी उत्तरदाताओं की समाजार्थिक परिस्थिति का अध्ययन
उपखंड 2 - नए माध्यम में समाचार के प्रस्तुतिकरण का अध्ययन
उपखंड 3 - विविध प्रारूपों में समाचारों के उपयोग का अध्ययन
उपखंड 4 - विविध प्रारूपों में संप्रेषित समाचारों के प्रभाव का अध्ययन

शोध अध्ययन की सीमाएं

1 - यह अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर संभाग के अंतर्गत आने वाले जिलों में संपादित किया जाएगा।
2 - अध्ययन नए माध्यमों में समाचार के विविध प्रारूपों पर केंद्रित होगा।
3 - विविध प्रारूपों में समाचार के उपयोग एवं प्रभाव तक अध्ययन सीमित होगा।

7. प्रस्तावित अध्ययन के क्षेत्र में योगदान

तकनीकी क्रांति ने लोगों की जीवन शैली पर भी प्रभाव डाला है। छत्तीसगढ़ में भी आई पॉड, लैप टॉप और लाइव टीवी का चलन है। समाचारों के लिए लोग थ्री जी युक्त मोबाइल को उपयोग में ला रहे हैं। छत्तीसगढ़ में " नए माध्यमों में समाचार : उपयोग एवं प्रभाव का अध्ययन " विषय पर अभी तक कोई शोध नहीं हुआ है। प्रस्तावित शोध से प्रदेश में तकनीक का उपयोग किस रूप में हो रहा है तथा समाचार के लिए लोग महंगे गजट्स का कितना उपयोग कर रहे हैं यह जानने में मदद मिलेगा। विविध प्रारूपों में समाचार के प्रस्तुतिकरण को रोचक और उपयोगी बनाने कि लिए सुझाव देने में यह शोध महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। इस शोध से विविध प्रारूपों में समाचार के संप्रेषण में आने वाली बाधाओं को दूर किया जा सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, आर (1995).गेटिंग द वलर्ड आउट, द क्विल
2. एलन, एस (2002) रिव्यूविंग द इंटरनेट : आन लाइन न्यूज आफ सितंबर 11, इन बी. जेलिजर एंड एस एलन जर्नलिज्म आफ्टर सितंबर 11.लंदन एंड न्यू यार्क, रूटलेज
3. ब्लेयर, टी. (2001) इंटरनेट परफार्मस ग्लोबल रोल, सप्लीमेंटिंग टीवी, आन लाईन जर्नलिज्म रिव्यू,11 सितंबर
4. बोजकोवस्की, पी.जे (2004) डिजिटाइजिंग द न्यूज : इन्नोवेशन इन आन लाईन न्यूज पेपर्स, कैम्ब्रिज, एमए : द एमआईटी प्रेस
5. बोमैन, एस. एंड विलिस, सी. (2005) द फ्यूचर इज हियर, बट डू न्यूज मीडिया कंपनीज सी इट ? .नीमैन रिपोर्टस्, विंटर
6. गुंटर, बी. (2003) न्यूज एंड द नेट. माहवाह, एनजे; लॉरेंस अर्लबॉम
7. हाल, जे. (2001) आन लाईन जर्नलिज्म : ए क्रिटिकल प्राइमर, लंदन : प्लूटो
8. काहने, एल. (2000) द वेब द वे इट वाज, वायर्ड,
9. काहने, एल. .(2001ए) हू सेड द वेब फेल अपार्ट? वायर्ड न्यूज, 12 सितम्बर
10. काट्ज, जे. (2001) नेट : आउट मोस्ट सीरियस न्यूज मीडियम ? (स्लैशडॉट) ओआरजी, 11 अक्टूबर
11. कावामातो, के. (2003) डिजिटल जर्नलिज्म : इमर्जिंग मीडिया एंड द चैंजिंग हरिजन्स आफ जर्नलिज्म, लैनहम, एमडी ; रोमैन एंड लिटिल फिल्ड
12. किम, जे. एंड ली, एस. (2005) मीडिया बिग बैंग : चैलेंज एंड चेंज इन द मीडिया वलर्ड, ट्रांस, वाय. ली, सीयूर ; कम्यूनिकेशन्स बूक्स
13. कोच, जे. (1991) जर्नलिज्म फॉर द 21 सेंचुरी : आन लाइन इंफार्मेशन, इलेक्ट्रानिक डाटा बेसेज एंड द न्यूज, वेस्ट पोर्ट, सीटी एंड लंदन ; प्रेइगर
14. लेंगफील्ड, ए. (2001ए) व्हेन वेबसाईट्स कॉट अप, देन रैन फॉर, आनलाईन जर्नलिज्म, रिव्यू, 11 सितम्बर
15. लेंगफील्ड, ए. (2001बी) , कॉमर्शियल साइट्स स्ट्रगल्स टू कीप करेंट, आनलाइन जर्नलिज्म, रिव्यू, 12 सितम्बर

16. लसिका, जे.डी. (2001ए) ए स्कोरकार्ड फॉर नेट न्यूज इथिक्स, आनलाइन जर्नलिज्म रिव्यू, 20 सितम्बर

17. लसिका, जे.डी. (2001बी) आन लाइन न्यूज आन ए टाइट रोप, आनलाइन जर्नलिज्म रिव्यू, 11 नवम्बर

18. लसिका, जे.डी. (2003) ब्लॉग एंड जर्नलिज्म नीड ईच अदर, नीमैन रिपोर्टस्, फाल

19. मेप्स, एम. (2005) 60 मिनट्स इज गोइंग डाउन ! वैनिटी फेयर, दिसम्बर

20. मथेसन, डी. (2004) वेबलॉग्स एंड द इपिस्टेमोलॉजी आफ द न्यूज : सम ट्रेंड्स इन आन लाइन जर्नलिज्म, न्यू मीडिया एंड सोसायटी

21. मेयर, पी. (2004) द वेनिशिंग न्यूजपेपर : सेविंग जर्नलिज्म इन द इनफॉमेशन एज, कोलंबिया, एमओ : यूनिवर्सिटी आफ मिसौरी प्रेस

22. मिलर, आर. (2001) फ्रॉम नाइस साइट टू न्यूज पोर्टल : हाउ स्लैशडॉट सरवाइव्ड द अटैक, आन लाइन जर्नलिज्म रिव्यू, 14 सितम्बर

23. नॉटन, जे. (1999) ए ब्रीफ हिस्ट्री आफ द फ्यूचर : द ओरिजिन्स आफ द इंटरनेट, लंदन : फीनिक्स

24. ओलसेन, टी.जी. (1995) सायबरहोक्स ! कोलंबिया जर्नलिज्म, रिव्यू

25. आउटिंग, एस. (2001ए) अटैक्स लेसन्स फॉर न्यूज वेब साईट्स, एडिटर एंड पब्लिशर्स, 19 सितम्बर

26. पैवलिक, जे.वी. (2001) जर्नलिज्म एंड न्यू मीडिया, न्यू यार्क ; कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस

27. साल्टर, एल, (2003) डेमोक्रेसी, न्यू सोशल मूवमेंट्स, एंड द इंटरनेट : ए हबेमसियन एनलिसिस इन एम. एमसी कफे एंड एम.डी. आयर्स सायबर एक्टिविज्म, न्यू यार्क एंड लंदन : रूटलेज

28. सालवेन, एम.बी., गैरिसन, बी., एंड ड्रिसकाल, पी.डी. (2005) आन लाइन न्यूज एंड द पब्लिक, माहवाह, एन.जे. : लॉरेंस अर्लबॉम

29. सैमब्रूक, आर. (2006) हाउ द नेट इन ट्रांसफार्मिंग न्यूज, बीबीसी न्यूज आन लाइन, 20 जनवरी

30. विंस्टन, बी. (2005) मेसेज : फ्री एक्सप्रेसन, मीडिया एंड द वेस्ट फ्रॉम गुटेनबर्ग टू गूगल, लंदन : रूटलेज

31. आर्य पीके, इलेक्ट्रानिक मीडिया, प्रतिभा प्रतिष्ठान, 1661 दखनीराय स्ट्रीट, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002,

32. चतुर्वेदी जगदीश्वर, हाइपर टेक्स्ट वर्चअल रियलिटि और इंटरनेट, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स.प्रा..लिमिटेड, 4697/3,21-ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002,

33. कुमार सुरेश, इंटरनेट पत्रकारिता, तक्षशिला प्रकाशन, 98—ए, हिन्दी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली- 110002,

34. मिश्र राजेन्द्र, राठौर देवी सिंह, पत्रकारिता के विविध आयाम, तक्षशिला प्रकाशन, 98—ए, हिन्दी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली- 110002,

35. मेहरा डॉ रमेश, मीडिया निर्माण, तक्षशिला प्रकाशन, 98-ए, हिन्दी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली- 110002,

36. नाथ श्याम, असेसिंग द स्टेट आफ वेब जर्नलिज्म, आर्थर प्रेस, ई-35/103, जवाहर पार्क, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092,

37. पंत एनसी, मुद्रण के तकनीकि सिद्धांत, तक्षशिला प्रकाशन, 98-ए, हिन्दी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली- 110002,

38. शर्मा डॉ हरि मोहन, रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता, तक्षशिला प्रकाशन, 98-ए, हिन्दी पार्क, दरियागंज, नई दिल्ली- 110002,

.

नए माध्यमों में समाचार : उपयोग एवं प्रभाव का अध्ययन

(रायपुर संभाग के संदर्भ में)

अनुक्रमणिका

अध्याय - 1 नए माध्यमों में समाचार

(क) नए माध्यमों का आशय एवं विकास

(ख) समाचार का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरुप

(ग) समाचारों की विशेषताएं

अध्याय - 2 शोध पद्धति

(क) साहित्य का पुनरावलोकन

(ख) अध्ययन क्षेत्र का परिचय

(ग) शोध का उद्देश्य एवं महत्व

(घ) शोध पद्धति

(ड.) शोध की सीमाएं

अध्याय - 3 ऑनलाइन समाचारों की भूमिका

(क) सूचना एवं शिक्षा

(ख) जनमत निर्माण

(ग) सामाजिक सुधार एवं विकास

अध्याय - 4 समाचार के उपयोग एवं प्रभाव का विश्लेषण

(क) अध्ययन में सहभागी उत्तरदाताओं की सामाजिक और आर्थिक परिस्थिति का अध्ययन

(ख) नए माध्यमों में समाचार के प्रस्तुतिकरण का अध्ययन

(ग) विविध प्रारूपों में समाचार के उपयोग का अध्ययन

(घ) विविध प्रारूपों में संप्रेषित समाचारों के प्रभाव का अध्ययन

अध्याय - 5 सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

- संदर्भ ग्रन्थ सूची
- परिशिष्ट
- प्रश्नावली/अनुसूची का प्रारूप